रूहों के श्याम श्यामा अंग संग
झलकत झलकत नूरी अंग

1- चौंसठ थंभ है ऊपर चन्द्रवा
मूलमिलावे का है नूरी जलवा
सिहांसन की ज्योत करती रोसन झिलमिल
हीरे मोति माणिक नंग

2- तीजी भोम की जो पड़साल
ठौर बड़े बड़े दरवाजे विशाल
धनी आवत हैं उठ प्रात,वन सींचत अमृत अघात
पसु पंखी का मुजरा लेवें देवें
मस्त निगाहों से दिए दर्शन

3- सैंया आवत करें झनकार
पांव भूखण भोम ठमकार
झलकतियां रे मलपतियां सखियां
सदा आनन्द इन वतन

Nijanand App

4- कई फलंग दे उच्छलियां
कई फूल लता जो फिरतीयां
कई हौले हौले हौलतीयां
कई मालतियां मचकतियां
कई आवत हैं ठेलतियां संखियां
रंग रस में डूबे सभी के मन

5- इत और न दूजा कोई
सरूप एक है लीला दोई
युगल सरूप का दर्शन पाकर हो गए
सखियों के पुलकित अंग

Nijanand App